

# अग्रवान्ज बुद्धको पर्मपुण



प्रकाशक :

धर्मकीर्ति प्रकाशन  
धर्मकीर्ति बौद्ध अध्ययन गोष्ठी  
धर्मकीर्ति विहार

## Dharmakirti Publication (English)

- |  |                             |
|--|-----------------------------|
| 1. Buddhist Economics & the Modern World | 4. Dharmakirti in Nut Shell |
| 2. Dharmakirti Bihar Today               | 5. Dhamma & Dhammadawati    |
| 3. Dharmakirti Bihar                     | 6. Paritta Suttas           |

# धर्मकीर्ति प्रकाशन

(नेपाल भाषा)

१. महासतिपटान सूत्र	३९. बुद्धया अर्थनीति
२. बुद्धया ज्ञानिग्. विपाक	४०. श्रमण नारद
३. अभिधर्म (भाग-१)	४१. उखानया बाख्यं पूचः
४. क्रहिं प्रतिहार्य	४२. पालिभाषा अवतरण (भाग-१)
५. वासेटित्येरी	४३. न्हापार्याह गुरु सु ? (दि.स.)
६. यःह म्हयाय	४४. पालि प्रवेश (भाग-१)
७. पञ्चनीवरण	४५. पालि प्रवेश (भाग-२)
८. भावना	४६. चमत्कार
९. एकताया ताःचा	४७. बाख्यं (भाग-४)
१०. ऐम छु ज्वी	४८. राहुलयात उपदेश
११. त्रिरत्न गुण स्मरण	४९. अभिधर्म (वित्तकाण्ड छग्या संक्षिप्त परिचय)
१२. बुद्धपुजा विधि	५०. मणिचुड जातक
१३. मैत्री भावना	५१. महाजनक जातक
१४. कर्तव्य	५२. गृही विवय (तु.सं.)
१५. मिखा	५३. चरित्र पूचः (भाग-१)
१६. परित्राण	५४. बौद्ध ध्यान (भाग-२)
१७. हृदय परिवर्तन	५५. शान्तिया त्वायः
१८. बुद्धया अन्तिम यात्रा (भाग-१)	५६. बुद्ध व शिक्षा
१९. बुद्धया अन्तिम यात्रा (भाग-२)	५७. विश्वधर्म प्रचार देशना (भाग-२)
२०. कर्म	५८. जातकमाला (भाग-१)
२१. बाख्यं (भाग-१)	५९. त्रिरत्न बन्दना व सूत्र पूचः
२२. बौद्ध ध्यान (भाग-१)	६०. चरित्र पूचः (भाग-२)
२३. बोधिसत्त्व	६१. त्रिरत्न बन्दना व पञ्चवर्षीलया कलाफल
२४. शाक्यमुनि बुद्ध	६२. लुम्बिनिइ विपस्सना
२५. अनन्तलक्षण सूत्र	६३. विश्वधर्म प्रचार देशना (भाग-१)
२६. मति भिसा गति भिन्नी	६४. योगीया चिठी
२७. अहिंसाया विजय	६५. संक्षिप्त बुद्ध जीवनी
२८. बाख्या (भाग-३)	६६. बुद्धधर्म
२९. महास्वप्न जातक	६७. जातक बाख्यं
३०. लक्ष्मी दा:	६८. जातकमाला (भाग-२)
३१. अभिधर्म (भाग-२)	६९. सर्वज्ञ (भाग-१)
३२. बाख्या फल (भाग-१)	७०-७१. पालि प्रवेश (भाग-१ व २)
३३. बाख्या फल (भाग-२)	७२. किशा गौतमी
३४. धानि व मैत्री	७३. जप, पाठ व ध्यान
३५. प्रार्थना संग्रह	७४. धर्म मसीनि
३६. बाख्यं (भाग-२ दि.स.)	७५. तेमिय जातक
३७. प्रौढ बौद्ध कक्षा	७६. त्रिरत्न गुण लुम्के, जानया मिखा चायेके
३८. मुर्वाम्ह पासा मञ्जु	७७. धर्मस्पद

# धर्मकीर्ति प्रकाशन

## (नेपाल भाषा)

- |   |   |
|---|---|
| ३०. यार्ड भाग-५                                 | ११८. नगरु विरत्न बन्दना व धम्मपट                |
| ३१. मरतरन धन                                    | ११९. मनुष्य यहः                                 |
| ३२. सर्वेन भाग-२                                | १२०. संस्कृति                                   |
| ३३. दान   | १२१. कर्तव्य (हि.स.)                            |
| ३४. अधिक सूत                                    | १२२. चिह्नित महे मण्डलवेद याठ यायेण परिज्ञाण    |
| ३५. मद्याम भाग                                  | १२३. मृदुया कलणा व छात्रवर्ण                    |
| ३६. महासिंहनाद सूत                              | १२४. विरक्तज्ञाया बार्ह                         |
| ३७. भिस्त काय व मद्याम                          | १२५. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण                   |
| ३८. भिस्त जीवनी                                 | १२६. धम्मचब्दकाण्डवत्तन सूत                     |
| ३९. समय व विपालना सहित भावना विधि               | १२७. पट्टठानपालि                                |
| ४०. महामारद जातक                                | १२८. दर्ये व जायेत्वन                           |
| ४१. भिस्त मध्या                                 | १२९. शिखा भाग-५                                 |
| ४२. विवेक दृढि                                  | १३०. धर्मया दान                                 |
| ४३. इग्ने लाइम्ह लाई                            | १३१. लभित बुद्ध वस भाग-१                        |
| ४४. बुद्धपूजा विधि                              | १३२. लभित बुद्ध वस भाग-२                        |
| ४५. स्वास्थ्य लाभ                               | १३३. अभिधर्म भाग-२ (हि.स.)                      |
| ४६. शिखा भाग-१, २                               | १३४. अभिधर्म पालि                               |
| ४७. दुर्दि व तुण्णा                             | १३५. नामायाम्ह मुह तु ?                         |
| ४८. विषयना ध्यान                                | १३६. अनन्तवक्षण सूत                             |
| ४९. सतिपट्ठान भावना                             | १३७. बुद्धपूजा, धम्मपट व ज्ञानमाला              |
| ५०. यार्ड भाग-१                                 | १३८. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण                   |
| ५१. धम्मचब्दकाण्डवत्तन सूत                      | १३९. धम्मचब्दकाण्डवत्तन सूत (हि.स.)             |
| ५२. गौतम बुद्ध                                  | १४०. बुद्ध बन्दना विधि व बुद्धपा लिङ्गि विषाक्त |
| ५३. नेपालय ३५ रे तिए लुम्बिनि                   | १४१. मनुष्य यहः (हि.स.)                         |
| ५४. बुद्ध व शिखा                                | १४२. बीड बीड कवता                               |
| ५५. शिखा भाग-३                                  | १४३. नामायाम्ह मुह तु ? व अभिधर्म धन            |
| ५६. शिखा भाग-४                                  | १४४. बीड स्त्रित पृथ:                           |
| ५७. महास्वाम जातक (हि.स.)                       | १४५. विरत्न बन्दना परित्त सूत                   |
| ५८. धम्मपट व्याख्या भाग-१                       | १४६. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण (ब.स.)            |
| ५९. धम्मपटया बाहौद                              | १४७. सूत पृथ:                                   |
| ६०. अभिधर्म भाग-२ (हि.स.)                       | १४८. शास्त्रमूली बुद्ध                          |
| ६१. सत्तराहा स्वाप                              | १४९. तुण्णा                                     |
| ६२. धम्मपट (मूल यात्रि सहित नेपाल भाषाय अनुवाद) | १५०. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण (हि.स.)           |
| ६३. आदर्श बीड निलापि                            | १५१. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण (त.स.)            |
| ६४. बीड निलिक शिखा भाग-१                        | १५२. सक्रविभृत सूत (नेपाल भाषा)                 |
| ६५. विसानन्द जातक                               | १५३. बीडवनी                                     |
| ६६. निवाण (रचना संयोग)                          | १५४. अनागत वस                                   |
| ६७. विरत्न युग्म लुम्बक, ज्ञानया मिष्ठा भाष्यक  | १५५. विरत्न युग्म लुम्बके                       |
| ६८. यात्रि भाषा अक्तरणा भाग-२                   | १५६. मनुष्य यहः व यैम तु ज्ये (उ.स.)            |
| ६९. दीपांयु ज्ञीवा                              | १५७. विरत्न बन्दना व परिज्ञाण (बी.स.)           |

# धर्मकीर्ति प्रकाशन

## (नेपाली भाषा)

१.	बौद्ध दर्शन	५४.	धर्मकीर्ति बौद्ध अध्ययन गोष्ठीको २५ वर्ष
२.	पञ्चशील	५५.	बुद्धपुजा विधि, कथा संग्रह र परित्राण
३.	शान्ति	५६.	बुद्धपुजा विधि र परित्राण
४.	नारी हृदय	५७.	बुद्धपुजा विधि
५.	पटाचारा स्थविरा चरित	५८.	लक्ष्मी (दि.सं.)
६.	बुद्धशासनको इतिहास (भाग-१)	५९.	बुद्धको शिक्षात्मक उपदेश
७.	नेपाली ज्ञानमाला	६०.	शान्ति मार्ग
८.	बुद्ध र बहाँको विचार	६१.	पहिलो गुरु को हुन् ?
९.	बौद्ध ध्यान	६२.	क्षान्ति र मैत्री (प्र.सं.)
१०.	लक्ष्मी (प्र.सं.)	६३.	दान परमिता
११.	उखानको कथा संग्रह	६४.	बुद्धको संस्कृति र महत्व
१२.	बौद्ध जगतमा स्वास्थ्य सेवा	६५.	बोध कथा र बौद्ध चरित्र
१३.	वैस्सन्तर जातक	६६.	मिलिन्द प्रश्न भाग-१ (दि.सं.)
१४.	सतिपटठान भावना	६७.	संक्षिप्त बुद्ध बैश्य भाग-१ (दि.सं.)
१५-१७.	बौद्ध विश्वास (भाग-१, २ र ३)	६८.	चिरं तिटटु सद्मम्मो
१८.	बौद्ध दर्शन	६९.	मिलिन्द प्रश्न भाग-२ (दि.सं.)
१९.	महासतिपटठान विपस्सना अन्तर्मुखि ध्यान	७०.	संक्षिप्त बुद्ध बैश्य भाग-२ (प्र.सं.)
२०.	सप्तरत्न धन	७१.	संक्षिप्त बुद्ध बैश्य भाग-१ (दि.सं.)
२१.	सफलताको कथा	७२.	महास्वप्न जातक (दि.सं.)
२२.	धर्मः एक चिन्तन	७३.	बुद्धपुजा विधि र कथा संग्रह (दि.सं.)
२३.	मानव महामानव	७४.	वित्त शुद्ध भए जीवन उज्ज्वल हुनेछ
२४.	निरोगी	७५.	प्रौढ बौद्ध कक्षा र लक्ष्मी
२५.	जातक कथा	७६.	नक्कली देवता
२६.	प्रज्ञा चक्षु	७७.	आमा बुबाको सेवा
२७.	तथागत हृदय	७८.	बुद्धको मूल उपदेश
२८.	सतिपटठान विपस्सना	७९.	शक्यमुनी बुद्ध
२९.	बौद्ध प्रश्नोत्तर	८०.	मणिचुड जातक
३०.	परित्राण (प्र.सं.)	८१.	मानिसलाई असल बनाउने बुद्ध शिक्षा
३१.	बुद्धपुजा विधि र कथा संग्रह (प्र.सं.)	८२.	क्षान्ति र मैत्री (दि.सं.)
३२.	मैले बुद्धको बुद्धधर्म	८३.	मति राम्यो भए गति राम्यो हुनेछ (दि.सं.)
३३.	बुद्धको जीवनी र दर्शन	८४.	बुद्ध शासनको इतिहास भाग-१ (दि.सं.)
३४.	आमा बाबु र छोराछोरी	८५.	मातापिताको गुण र बुद्धको सही बाटो
३५.	स्नेही छोरी	८६.	बौद्ध प्रश्नोत्तर (दि.सं.)
३६.	परित्तसूत्र (पालि भाषा)	८७.	बाल उपर्योगी संक्षिप्त बुद्ध जीवनी
३७.	मति राम्यो भए गति राम्यो हुनेछ	८८.	संक्षिप्त बुद्ध जीवनी
३८.	बुद्ध र बुद्धपूछि	८९.	बुद्धको चमत्कार
३९.	बुद्ध र बुद्धमंको संक्षिप्त परिचय र बुद्धको जन्मभूमि नेपालमा बुद्धप्रति असहिष्णुता	९०.	सन्त्त्व सुत्र
४०.	अ. धम्मवती	९१.	सच्चविभङ्ग सुत्र
४१.	बौद्ध ज्ञान	९२.	महानारद जातक
४२.	संक्षिप्त बुद्ध जीवनी	९३.	प्रौढ बौद्ध कक्षा र लक्ष्मी
४३-४४.	मिलिन्द प्रश्न भाग-१ र २ (प्र.सं.)	९४.	कर्तव्य
४५.	अमण नारद	९५.	बौद्ध जगतमा स्वास्थ्य सेवा
४६.	मानव स्वभाव	९६.	परित्राण-मूल पाली तथा अनुवाद सहित
४७.	महास्वप्न जातक	९७.	त्रिरत्न बन्दना र परित्राण पाठ
४८.	बुद्धपुजा विधि र कथा संग्रह (दि.सं.)	९८.	अमण नारद
४९.	बौद्ध ध्यान	९९.	बौद्ध दर्शन (चौथो संस्करण)
५०.	बुद्धको अन्तिम यात्रा (भाग-१)	१००.	आदर्श बौद्ध महिलाहरू
५१.	लक्ष्मी (दि.सं.)	१०१.	त्रिरत्न गुण स्मरण
५२.	सम्यक शिक्षा	१०२.	महासमय सुत्र
५३.	परित्राण (दि.सं.)	१०३.	दश संयोजन

# भगवान बुद्धको धर्मपुर

नेपालभाषामा अनुवादक :  
भिक्षु बुद्धघोष महास्थविर

नेपालीमा अनुवादक :  
अनागारिका वीर्यवती

प्रकाशक :  
धर्मकीर्ति प्रकाशन  
धर्मकीर्ति बौद्ध अध्ययन गोष्ठी  
धर्मकीर्ति विहार

**प्रकाशक :**

धर्मकीर्ति प्रकाशन

धर्मकीर्ति बौद्ध अध्ययन गोष्ठी

धर्मकीर्ति विहार

श्रीघः, नःघल टोल

फोन नं. : ४२५९४६६

बुद्ध सम्बत् : २५५५

नेपाल सम्बत् : ११३२

विक्रम सम्बत् : २०६९

इस्वी सम्बत् : २०१२

पहिलो प्रकाशन : १,५०० (एकहजार पाँचसय)

कम्प्युटर र पेज सेटिङ्ग : मच्चाकाजी महर्जन

छपाई : समुन्द्र छापाखाना  
लगन टोल, काठमाडौं

## प्रकाशकीय

यो पुस्तक ‘भगवान बुद्धको धर्मपुर’ धर्मकीर्ति विहारको पुस्तक सदस्यहरूको आर्थिक सहयोगमा प्रकाशन गरी प्रदान गरिएको छ । मिलिन्द प्रश्न नामको पुस्तकबाट साभार गरी नेपालभाषामा पहिला प्रकाशित पुस्तकलाई अनागारिका वीर्यवतीले नेपालीभाषामा रूपान्तर गर्नुभई बढीभन्दा बढी पाठकवर्गले बुद्धशिक्षा अध्ययन गर्ने मौका प्रदान गरेकोले अनुवादकलाई साधुवाद व्यक्त गर्दछौं । धर्मकीर्ति प्रकाशनको रूपमा प्रकाशित बुद्धशिक्षाले भरिएको यस ज्ञानबर्धक पुस्तक धर्मदान गरेकोमा पुस्तक सदस्यहरूलाई साधुवाद सहित धन्यवाद दिन चाहन्छु । साथै प्रुफ हरें लगायत भाषा शुद्धिमा सहयोग गर्ने मदनरत्न मानन्धरलाई पनि धन्यवाद छ ।

मिति : २०६९ बैशाख

भिक्षुणी धर्मवती  
शासनधज धर्माचरिय  
अगगमहागन्थवाचक पण्डित  
अध्यक्ष  
धर्मकीर्ति बौद्ध अध्ययन गोष्ठी  
धर्मकीर्ति विहार,  
श्रीघः, नःघल काठमाडौं, नेपाल ।

## भगवानको धर्मपुर

महाराज ! भगवान बुद्धले बसाउनु भएको धर्मपुरलाई शीलरूपी पर्खालले घेरा लगाइएको छ । चारैतर्फ हिरिरूपी पोखरी छन् । ज्ञानरूपी चौकोस रहेका छन् । वीर्यरूपी बुज्जा छन् । श्रद्धारूपी जग छ । स्मृतिरूपी द्वारपाल छन् । प्रज्ञारूपी ठूलठूला भवन छन् । धर्मोपदेश रूपी सूत्रहरूले सजिएका उद्यान छन् । अभिधर्मका दोबाटाहरू छन् । विनयका न्यायालय छन् । स्मृतिप्रस्थानका फराकिला बाटाहरू छन् । बाटोको दायाँ बायाँ पसलहरू छन् । ती पसलहरू यसरी रहेका छन् :-

- १) फूलको पसल
- २) सुगन्धको पसल
- ३) फलफूलको पसल
- ४) औषधीको पसल
- ५) जडिबुटीको पसल
- ६) अमृतको पसल
- ७) रत्नको पसल
- ८) विभिन्न चीजबीजहरूको पसल

- १) फूलको पसल

फूलको पसलमा किसिम किसिमका फूलहरू छन् । ती फूलहरू यसप्रकारका छन् :

- क) अनिच्छसञ्ज्ञा - संसारमा रहेका सबै चीज अनित्य छन् भनी मनले धारण गर्ने ।
- ख) दुःखसञ्ज्ञा - अनित्य भएको कारणले दुःख भनी बुझ्ने ।
- ग) अनत्तसञ्ज्ञा - आफूले भने जस्तो नरहेको कारणले अनात्म भनी थाहापाउने ।
- घ) असुभसञ्ज्ञा - बाहिर हेर्दा राम्रो देखे तापनि भित्र सबै कुहिएको अवस्थामा रहेको छ भनी बुझ्ने ।
- ड) आदीनवसञ्ज्ञा - दोषापूर्ण रहेको छ भनी बुझिलिने ।
- च) पहाणसञ्ज्ञा - एकदिन त्यागेर, छोडेर जानु पर्नेछ भनी बुझ्ने ।
- छ) विरागसञ्ज्ञा - टाँसिएर बस्न नहुने अर्थात आशक्तिवश मोहमा भुलेर बस्न हुन्न भनी मनले धारण गर्ने ।
- ज) निरोधसञ्ज्ञा - सबै संस्कार एकदिन नाश भएर जानेछ भनी बुझिलिने ।
- झ) सब्बलोके अनभिरतसञ्ज्ञा - कुनैमा पनि बेहोशपूर्वक लट्ठ भई नभुल्ने ।

ञ) सब्ब संखारेसु

अनिच्चसञ्ज्ञा

- सबै संस्कार अनित्य रहेको  
कुरालाई बुझ्ने ।

ट) आनापानासति

- श्वासप्रश्वासमा ध्यान दिने ।

ठ) उध्दमातकसञ्ज्ञा

- मृत शरीर सुन्निएर आउने  
अवस्थालाई ध्यान दिने ।

ड) विनीलकसञ्ज्ञा

- मृत शरीर नीलो भएर जाने  
अवस्थालाई ध्यान दिने ।

ढ) विपुल्बकसञ्ज्ञा

- मृत शरीरमा पीप भरिएर आउने  
अवस्थालाई ध्यान दिने ।

ण) विच्छिदकसञ्ज्ञा

- मृत शरीरमा प्वालहरू देखिने  
अवस्थालाई ध्यान दिने ।

त) विक्खायितकसञ्ज्ञा - शवलाई गिद्धहरूले लुछाचुँद गरी  
खाइरहेको अवस्थालाई ध्यानदिने ।

थ) विक्खितकसञ्ज्ञा - टुक्रा टुक्रा भई छरिएर रहेको  
शवको अवस्थालाई ध्यान  
दिने ।

द) हत विक्खितकसञ्ज्ञा - हात खुट्टाहरू छुट्टिएर छरिएर रहेको  
शवको अवस्थालाई ध्यान दिने ।

ध) लोहितकसञ्ज्ञा - शरीरबाट रगत बगिरहेको  
अवस्थालाई ध्यानदिने ।

- न) पुलुवकसञ्जा - शब कुहिएर स्याउँस्याउँ किरा परिरहेको अवस्थालाई ध्यान दिने ।
- प) मैत्री सञ्जा - मित्रताको चिन्तन ।
- फ) करुणा सञ्जा - दुःखीप्रति दया राख्ने ।
- ब) मुदिता सञ्जा - अरुहरुको भलो भएको देखी खुशी हुने ।
- भ) उपेक्षा सञ्जा - तटस्थता
- म) मरणानुस्सति - एकदिन मर्नुछ भनी सम्भरहने ।
- य) कायगतानुस्सति - मलमूत्रले भरिएको शरीर भनी ध्यान दिने ।

महाराज ! भगवान् (बुद्ध) ले ध्यान भावना गर्न योग्य विषय यिनीहरू नै हुन् भनी बताउनु भयो ।

बृद्ध हुने र मरण हनुपर्ने अवस्थाबाट जो व्यक्ति मुक्त हुन चाहन्छ, त्यस व्यक्तिले माथि उल्लिखित विभिन्न अवस्थाहरू मध्ये एक अवस्थालाई छानी ध्यान अभ्यास गर्नुपर्छ । त्यसलाई अभ्यास गर्दै लान सकिएमा रागबाट मुक्त हुनेछ, द्वेषबाट मुक्त हुनेछ, मोहबाट मुक्त हुनेछ, अभिमानबाट मुक्त हुनेछ, मिथ्या सिद्धान्तबाट मुक्त हुनेछ र संसाररूपी सागरबाट तरेर जान सकिनेछ । त्यस व्यक्तिको तृष्णाको धारा रोकिने छ । तीनप्रकारका मलबाट रहित हुनेछ । फेरि सम्पूर्ण क्लेशहरूलाई नाश गरी मल रहित, राग रहित र शुद्ध

निर्मल चित्त सहितको व्यक्ति भई आवागमन (जन्म मरण चक्र) बाट मुक्त हुन सकिनेछ । नगर मध्येमा श्रेष्ठ रहेको निर्वाण नगरमा प्रवेश गर्न सकिनेछ । अर्हत् भई आपनो चित्तको अन्त्य गर्न सकिनेछ । महाराज ! बुद्धको फूलको पसल यही हो ।

“कर्मरूपी पैसा बोकी धर्मको पसलमा जाने,  
अभ्यासको लागि एक योग्य विषय किनी ल्याउने  
अनि यही अभ्यास गर्दै मुक्ति प्राप्त गर्ने ।”

“भन्ते नागासेन ! सुगन्धको पसल कस्तो र केलाई  
भनिन्छ ?”

## २) सुगन्धको पसल

महाराज ! भगवान बुद्धले हामीलाई कुन शील पालन गर्नको निमित्त बताउनु भएको छ ? भगवान बुद्धको पुत्र (भिक्षुहरूले) आफ्नो शील सुगन्धले देवताहरू, मनुष्यहरू सहित सारा लोकलाई सुगन्धित पार्नुहुन्छ । उहाँहरूको शील सुगन्ध दिशा, अनुदिशा लगायत हावाको अगाडि पछाडि पनि बगेर चारैतरफ फैलिएर गइरहेको हुन्छ ।

राजाले ती कुन कुन शील होला भनी सोधे ।

महाराज ! क) शरण शील ख) पञ्चशील ग) अष्टशील घ) दश शील ड) प्रातिमोक्ष संवरशील ।

महाराज ! भगवान् बुद्धको सुगन्धको पसल यिनीहरू नै हन् ।  
महाराज ! देवाधिदेव भगवान् बुद्ध स्वयम्‌ले यसरी आज्ञा  
हनु भएको छ-

फूल, चन्दन, तगर चमेलीको सुगन्ध हावा नचलेको  
ठाउँमा फैलन सक्दैन, तर सत्पुरुषहरूको सुगन्ध सबै दिशामा  
फिंजिएर गइरहेको हुन्छ ।

चन्दन, तगर, कमलको फूल, चमेली फूलको सुगन्ध  
भन्दा पनि शील सुगन्ध अति उत्तम छ । शीलवान व्यक्तिहरूको  
सुगन्ध फूलको सुगन्ध भन्दा पनि कैयौं गुणा उत्तम छ । यी  
उत्तम सुगन्ध देवलोकसम्म पनि फैलिरहेको हुन्छ ।

भन्ते नागसेन ! फलको पसल कस्तो होला ?

### ३) फलको पसल

महाराज ! भगवान् बुद्धले फलको पसललाई यसरी  
बताउनु भएको छ -

श्रोतापत्ति फल । सकृदागामि फल । अनागामि फल ।  
अरहत फल । शून्यता फल (निर्वाण) समापत्ति । अनिमित्त  
फल समापत्ति । अप्पणिहित फल समापत्ति । यी फलहरू  
मध्ये आफूलाई मनपर्ने त्यस फललाई यथोचित तरिकाले  
कर्मरूपी पैसा तिरेर किन्तु सकिन्छ ।

## वर्षेभरि फलने आँप

महाराज ! एकजना व्यक्तिसंग वर्षे भरी आँप फलने एउटा बोट रहेछ । जबसम्म आँप किन्ने व्यक्ति आउँदैनन् तबसम्म उसले आँप टिप्पैन । आँप किन्ने व्यक्ति आएपछि उसले आँपको पैसा असुल्छ र भन्छ “वर्षेभरि फलने आँपको बोट हो यो, तपाईंलाई मनपरेको आँप टिपीलानुहोस् । भर्खर फलेको ठूलो, गुलियो, काँचो, राम्ररी पाकेको मध्ये कुन मनपर्छ टिप्पुस् ।” सो व्यक्तिले पनि भर्खर फलेको आँप मन परेमा सोहि अनुसार पैसा तिरेर लान्छ । ठूलो मनपरेमा सोहि अनुसार, गुलियो मनपरेमा सोहि अनुसार, काँचो मनपरेमा सोहि अनुसार, पाकेको मनपरेमा सोहि अनुसार पैसा तिरेर लान्छ ।

महाराज ! (कर्मको क्षेत्रमा पनि) मानिसहरूले आफूलाई जस्तो फल मनपर्छ, कर्मरूपी पैसा तिरेर त्यस्तै फल किनेर लगिरहेको हुन्छ । श्रोतापत्ति फल मन परेको हो वा सकृदागामि फल मन परेको हो वा अनागामि फल मन परेको हो वा अरहत् फल मनपरेको हो, शून्यता फल समापत्ति, अनिमित्त फल समापत्ति, अप्पणिहित फल समापत्ति । महाराज ! भगवान् बुद्धको फलको पसल यही हो ।

## ४) औषधि पसल

महाराज ! भगवान बुद्धले यस्तो विशेष औषधिको विषयमा हामीलाई बताउनु भएको छ, जुन औषधिबाट उहाँले देवता

र मनुष्य लगायत सारा संसारलाई क्लेशबाट मुक्त गराउनु  
भएको थियो ।

त्यो कस्तो औषधि होला ?

महाराज ! भगवान बुद्धले चारवटा आर्यसत्यलाई बताउनु  
भएको छ ।

क) दुःख आर्य सत्य

ख) दुःख समुदय आर्य सत्य

ग) दुःख निरोध आर्य सत्य

घ) दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा मार्ग आर्य सत्य

जुन मुमुक्षुहरूले यस चार आर्यसत्य धर्मलाई बुझ्छन्  
तिनीहरूले जन्म हुने, बुढा बुढी हुने, मरण हुने, शोक परिदेव  
दुःख दौर्मनस्य उपायास (सन्ताप) आदिबाट मुक्त हुन सक्नेछन् ।  
भगवान बुद्धको औषधि पसल यही हो ।

#### ५) जडिबुटीको पसल

महाराज ! भगवान् बुद्धले यस्तो जडिबुटीहरूको विषयमा  
बताउनु भएको छ, जुन जडिबुटीले देवता र मनुष्यहरूलाई  
उपचार गरी उद्धार गरिएको थियो ।

ती जडिबुटीहरू यसरी रहेका छन् :-

क) चारवटा स्मृतिप्रस्थान

ख) चारवटा सम्यक प्रधान

- ग) चारवटा ऋद्धिपाद
- घ) पाँचवटा इन्द्रिय
- ड) पाँचवटा बल
- च) सातवटा बोध्यङ्ग
- छ) आठवटा आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग ।

भगवान् बुद्ध्ले यी जडिबुटीहरूद्वारा जुलाव गराउनु भई मिथ्यादृष्टि (गलत सिद्धान्त), मिथ्या सङ्कल्प, मिथ्या वचन, मिथ्या कर्मान्ति, मिथ्या जीविका, मिथ्या व्यायाम, मिथ्या स्मृति र मिथ्या समाधिलाई फाल्नु भयो, लोभ, दोष, मोह, मान, दिट्ठ, विचिकिच्छा, थिन, उद्धच्च, अहिरिक, अनोतप्प आदि सबै क्लेशहरूलाई हटाउनु भयो । महाराज ! भगवान् बुद्धको जडिबुटी पसल यही हो । संसारमा नाना प्रकारका जडिबुटीहरू छन् । तर धर्मरूपी जडिबुटी समान अरू कुनै छैन ।

भिक्षुहरू ! धर्मरूपी यी औषधि सेवन गरी अजर अमर बन्नु । भावना गर्दै परम ज्ञान साक्षात्कार गर्नु । अनि सबै उपधि निर्मूल गरी निर्वाण साक्षात्कार गर्नु ।

भन्ते नागसेन ! भगवान् बुद्धको अमृतको पसल कस्तो होला ?

## ६) अमृतको पसल

महाराज ! भगवान बुद्धले अमृतको विषयमा पनि बताउनु भएको छ । भगवानले उत्त अमृतले देवता र मनुष्यहरू सहित सारा संसारलाई भरिपूर्ण गर्नुभयो । त्यसैले सबै देवता र मनुष्यहरू जसले यस अमृत सेवन गर्ने मौका प्राप्त गरेका छन्, तिनीहरू जन्म लिने, रोग भय, मृत्यु भय, शोक परिदेव दुःख चिन्ता हैरानी आदिबाट मुक्त भए ।

त्यो अमृत कस्तो होला ?

महाराज ! देवाधिदेव भगवान बुद्धले कायगतासतिलाई बताउनु भएको छ । भिक्षुहरू ! जसले कायगतासति भावना अभ्यास गर्छ, उसले अमृत पिएको जस्तै फाइदा लिन सक्नेछ । महाराज ! बुद्धको अमृत पसल यही हो । रोगले ग्रस्त जनताहरूलाई मध्यनजर राख्नु भई उहाँले अमृतको पसल खोल्नु भएको हो । कर्मरूपी रकम तिरी यो अमृत किनेर पिउनु ।

भन्ते नागसेन ! भगवानको रत्नको पसल कस्तो होला ?

## ७) रत्नको पसल

महाराज ! भगवान बुद्धले यस्तो रत्नको पसल खोल्नु भएको छ, जुन रत्नले सजधज भई उहाँका पुत्र भिक्षुहरूले देवता र मनुष्यहरू सहित सारा संसारलाई जगमगाई रहनु भएको छ । तल, माथि बीच भाग गरी सारा ठाउँमा प्रज्वलित

भइरहेका जाज्वल्यमान त्यस रत्नहरू यसरी रहेका छन् -

- क) शीलरत्न
- ख) समाधिरत्न
- ग) प्रज्ञारत्न
- घ) विमुक्तिरत्न
- ड) विमुक्ति ज्ञान दर्शनरत्न
- च) प्रतिसम्भदारत्न
- छ) बोध्यङ्गरत्न

भगवान बुद्धको रत्न पसल यही नै हो ।

### क) शीलरत्न

(शील रत्नलाई यसरी विश्लेषण गरिएका छन्)

- अ) प्रातिमोक्ष संवर शील
- आ) इन्द्रिय संवर शील
- इ) आजीव परिशुद्धि शील
- ई) प्रत्य सन्निस्सित शील
- उ) लघु शील
- ऊ) मध्यम शील
- ए) महा शील
- ऐ) मार्ग शील
- ओ) फल शील

महाराज ! जुन व्यक्तिहरू शीलरत्नले विभुषित भएर बस्थन्, उनीहरूलाई हेरी देवता, मनुष्य, मार, ब्रह्मा, श्रमण, ब्राह्मण आदि सबैको मन आनन्दित एवं हर्षित भई प्रशन्न भइरहने हुन्छ । महाराज ! एक भिक्षु शीलरत्नले सुसज्जित भई आफ्नो शोभाले दिशा, अनुदिशा, माथि, तल, बीच भाग आदि चारैतर्फ भरिपूर्ण बनाइरहेको हुन्छ । उँधो गई अवीचि नर्कसम्म, उँभो गई स्वर्गलोकसम्मको क्षेत्र भित्र जति पनि अन्य विभिन्न प्रकारका रत्नहरू छन्, ती रत्नहरू मध्ये यो शीलरत्न सबभन्दा माथिल्लो स्तरको रत्न हो । शीलरत्न अन्य रत्नहरूको दाँजोमा अगाडि रहने भएकोले यसले अन्य रत्नहरूलाई जितिरहेको हुन्छ । महाराज ! भगवान् बुद्धको रत्न पसलमा यस्तो अमूल्य शीलरत्न पाइन्छ । महाराज ! यसलाई नै भगवानको शीलरत्न भनिन्छ । कर्मरूपी रकम तिरी यस रत्नरूपी गहना किनेर आफूलाई सुसज्जित पार्नु ।

भगवानको समाधि रत्न कस्तोलाई भनिन्छ ?

### ख) समाधिरत्न

- अ) सवितर्क सविचार समाधि
- आ) अवितर्क विचार समाधि
- इ) अवितर्क अविचार समाधि
- ई) शून्यता समाधि

- उ) अनिमित्त समाधि
- उ) अप्रणिहित समाधि

महाराज ! समाधिरत्नले सुसज्जित हुनसक्ने भिक्षुको मनमा समाधि हुने वित्तिकै काम वितर्क, व्यापाद वितर्क, विहिंसा वितर्क, मान, उद्धच्च, आत्मदृष्टि, विचिकिच्छा, क्लेश, पाप, तथा नाना कुवितर्क आदि सबै विलीन भएर जानेछ । नष्ट भएर जानेछ । यी खराब मानसिक अवस्थाहरू केही पनि बाँकि रहँदैनन् ।

महाराज ! कमलको पातमा पानी अड्न सक्दैन । चिप्लिएर भुईमा भर्दछ । किनभने कमलको पात शुद्ध एवं चिप्लो हुन्छ । त्यसरी नै समाधिले सुसज्जित भिक्षुको मनमा समाधि हुने वित्तिकै काम वितर्क, व्यापाद वितर्क, विहिंसा वितर्क, मान, उद्धच्च, आत्म दृष्टि, विचिकिच्छा, क्लेश, पाप तथा नाना वितर्क सबै आफ से आफ विलीन भएर जानेछ । नष्ट भएर जानेछ । किनभने समाधि अत्यन्त शुद्ध भएको हुनाले । महाराज ! यसलाई नै भगवान बुद्धको समाधिरत्न भनिन्छ । महाराज ! यस्तो समाधिरत्न भगवान बुद्धको रत्न पसलमा मौजूद रहेको हुन्छ । जसले आफ्नो मुकुटमा समाधिरत्न जडान गरिराखेको हुन्छ, उसलाई कुवितर्कले सताउन सक्दैन । उसको चित्त कहिल्यै पनि चञ्चल हुँदैन । यस्तो रत्नलाई मनपर्ने व्यक्तिले लगाएर हेर्न सकिन्छ ।

## ग) प्रज्ञारत्न

महाराज ! भगवान बुद्धले प्रज्ञारत्न विषयमा पनि बताउनु भएको छ । प्रज्ञावान् (व्यक्तिले), भिक्षुले “यो पूण्य हो”, “यो पाप हो” भनी ठीक तरिकाले छुट्याउन सक्ने हुन्छ । यसरी प्रज्ञावान व्यक्तिले “असल”, “खराब”, “यो कार्य गर्न हुन्छ”, “यो कार्य गर्न हुँदैन”, “यो हीन हो”, “यो प्रणीत हो”, “यो कालो हो” “यो सेतो हो”, “यो कालो र सेतो मिसिएको हो”, “यो दुःख हो” आदि ठीक ठीक तरिकाले छुट्याउन सक्ने हुन्छ । (त्यति मात्र होइन) एक प्रज्ञावान् व्यक्तिले “यो दुःख हो” “यो दुःख समुदय हो”, “यो दुःख निरोध हो”, “यो दुःख निरोधगामिनी मार्ग हो” आदि भनी चतुआर्य सत्यलाई ठीक ठीक तरिकाले बुझन सक्ने हुन्छ । महाराज ! यसलाई नै भगवान बुद्धको प्रज्ञारत्न भनिन्छ ।

जसले प्रज्ञारत्नलाई शिरमा राख्छ, त्यो व्यक्ति आवागमन (जन्म मरण चक्र) मा बढि रूमलिनु पर्ने छैन । उसले तुरुन्त अमृतपद प्राप्त गर्नेछ । उसले पुनः जन्मलाई आनन्द मान्दैन ।

## घ) विमुक्तिरत्न

महाराज ! अर्हत पदलाई नै विमुक्तिरत्न भनिन्छ । एक भिक्षुले अर्हत भइसके पछि विमुक्तिरत्नले सुशोभित भइरहने

गर्छ । महाराज ! जसरी एक व्यक्तिले मोती, माला, मणि, सुन चाँदी, मुगाको माला लगाई आफ्नो शरीरलाई सुशोभित पारेर बस्थ, अगर, तगर रक्त चन्दन आदिले शरीरमा लेपन गरी शरीरलाई सुगन्धित पारेर बस्थ, नाग पुन्नाग, चम्पा फूल, मोती फूल, गुलाबको फूल, कमलको फूल, मालती मल्लिका इत्यादि फूल सिउरेर आफूलाई सजाएर बस्दा त्यस व्यक्ति अरू व्यक्तिको अगाडि सुन्दर, आकर्षक शोभायुक्त भई राम्रो देखिनेछ र सुगन्धित हुनेछ, त्यसरी नै अर्हत पद प्राप्त गरिसकेका एक पवित्र क्षीणाश्रव भिक्षु पनि विमुक्तिरत्नबाट सजिने भएकोले अन्य भिक्षुहरूभन्दा शोभायमान भइरहनेछ । चम्किरहनेछ । उसको मन आनन्द भइरहनेछ । किनभने विमुक्तिरत्न सबै गहनाहरू मध्ये उच्चकोटीको रत्नरूपी गहना हो । यस विमुक्तिरत्नलाई नै भगवान बुद्धको विमुक्तिरत्न भनिन्छ महाराज !

### ड) विमुक्तिज्ञान दर्शनरत्न

महाराज ! “विमुक्तिज्ञान दर्शनरत्न” प्रत्यवेक्षण ज्ञानलाई भनिन्छ । यही प्रत्यवेक्षण ज्ञानको सहयोग लिई आर्यश्रावकले मार्गफल निर्वाणलाई पनि प्रत्यवेक्षण गर्छ । उसले आफूसंग भएको क्लेश हटाउँदै बाँकि रहेका अन्य क्लेशहरूलाई पनि प्रत्यवेक्षण गरिरहेको हुन्छ । प्रत्यवेक्षण ज्ञानको सहयोगले नै

आर्यश्रावकले आफूले के गर्नुपर्ने हो त्यो गरिसकेको छु भनी बुझ्ने गर्छ । भिक्षुहरू हो ! त्यही ज्ञान प्राप्त गर्नको लागि उद्योग गर्नु ।

### च) प्रतिसम्भिदारत्त्व

महाराज ! प्रतिसम्भिदा चार प्रकारका छन् ।

- अ) अत्थ पटिसम्भिदा
- आ) धम्म पटिसम्भिदा
- इ) निरुत्ति पटिसम्भिदा
- ई) पटिभान पटिसम्भिदा

यी चार प्रकारका पटिसम्भिदा रत्तले सजधज भई बसेको भिक्खुले क्षेत्री सभा, ब्राह्मण सभा, वैश्य सभा, भिक्षु सभा आदि जुन सभामा गए पनि निसंकोच र निर्भयी भएर भाग लिन सक्ने हुन्छ ।

महाराज ! उदाहरणको लागि भन्ने हो भने लडाईमा भाग लिने सिपाहीले ५ प्रकारका शस्त्र धारण गरी निर्भयपूर्वक रणभूमिमा जाने गर्छ । यदि शत्रुहरूलाई टाढाबाट देखेमा उसले तिनीहरूलाई तीर चलाई मार्ने विचार गर्छ, अलि अगाडि आइपुगेको शत्रुलाई उसले भालाले रोपी मार्ने विचार गर्छ, त्योभन्दा पनि अगाडि आइपुगेको शत्रुलाई उसले गडाले हानेर मार्ने विचार गर्छ, अभ त्योभन्दा पनि अगाडि पुगेको शत्रुलाई उसले तरवारले दुई टुक्रा पारी मार्ने विचार गर्छ,

र विल्कुल आफ्नो नजिक पुगेको शत्रुलाई उसले चक्कुले रोपी मार्ने विचार गर्छ ।

त्यसरी नै महाराज ! ४ वटा प्रतिसम्भिदारत्तले सुसज्जित भिक्षु निर्भयपूर्वक जुन सभामा जानेछ, त्यहाँ उसले विचार गर्छ, “यदि मसंग कसैले अत्थ पटिसम्भिदा विषयमा प्रश्न सोधेमा उसलाई यस विषयमा अर्थ खुल्ने गरी प्रष्ट रूपमा उत्तर दिनेछु । हेतुलाई हेतु, प्रमाणलाई प्रमाण दिई उत्तर दिनेछु । उसको सबै शंका दूर गरिदिनेछु । उसको भ्रम निवारण गरिदिनेछु । उसको प्रश्नको उत्तर दिई उसलाई सन्तुष्ट पारिदिनेछु ।”

“कसैले मसंग धर्म पटिसम्भिदा विषयमा प्रश्न सोधेमा उसलाई पनि मैले धर्मले धर्म विषयमा बताउने छु, अमृतले अमृत विषयमा बताउने छु, असङ्गत धर्मले असङ्गत धर्म विषयमा बताउने छु, निर्वाण धर्मले निर्वाण धर्म विषयमा बताउने छु, शून्यता धर्मले शून्यता धर्म विषयमा बताउने छु, अनिमित्त धर्मले अनिमित्त धर्म विषयमा बताउने छु, अप्पणिहित धर्मले अप्पणिहित धर्म विषयमा बताउने छु, अनेक धर्मले अनेक धर्म विषयमा बताउने छु, उसको प्रश्नको उत्तर दिई उसलाई सन्तुष्ट पार्नेछु । कसैले मसंग निरूपित पटिसम्भिदा विषयमा प्रश्न गरेमा उसलाई पनि निरूपितले निरूपितलाई, पदले पदलाई, अनुपदले अनुपदलाई, अक्षरले अक्षरलाई, सन्धिले सन्धिलाई,

व्यञ्जनले व्यञ्जनलाई, अनुव्यञ्जनले अनुव्यञ्जनलाई, वर्णले वर्णलाई, स्वरले स्वरलाई, प्रज्ञपितिले प्रज्ञपितिलाई, व्यवहारले व्यवहारलाई बताई बुझाइदिनेछु, उसको सबै शंका निवारण गरिदिनेछु । उसको प्रश्नको उत्तर दिई उसलाई सन्तुष्ट पार्नेछु । कसैले मसंग पटिभान पटिसम्भदा विषयमा प्रश्न गरेमा उसलाई पटिभानले पटिभान विषयमा, उपमाले उपमा विषयमा, लक्षणले लक्षण विषयमा, रसले रस विषयमा बताई बुझाउने छु । उसको सबै शंका निवारण गरिदिनेछु । उसको प्रश्नको उत्तर दिई सन्तुष्ट पारिदिनेछु ।” महाराज ! यसलाई तै भगवान् बुद्धको पटिसम्भदारत्त भनिन्छ ।

### छ) बोध्यङ्गरत्न

महाराज ! बोध्यङ्गरत्न ७ प्रकारका छन् ।

- अ) स्मृति सम्बोध्यङ्ग
- आ) धर्मविचय सम्बोध्यङ्ग
- इ) वीर्य सम्बोध्यङ्ग
- ई) प्रीति सम्बोध्यङ्ग
- उ) प्रश्नबिधि सम्बोध्यङ्ग
- ऊ) समाधि सम्बोध्यङ्ग
- ए) उपेक्षा सम्बोध्यङ्ग

महाराज ! यी सातवटा सम्बोध्यङ्गले सजधज भइरहन

सक्ने भिक्षुले सबै अन्धकारलाई हटाई लोकलाई आफ्नो  
तेजले जाज्वल्यमान पारिदिनेछ । महाराज ! यसलाई नै  
भगवान बुद्धको बोध्यङ्गरत्न भनिन्छ ।

### द) विभिन्न चीजबीजहरूको पसल

महाराज ! भगवान बुद्धको विभिन्न चीजबीजहरूले  
सजिएको पसल यसरी रहेका छन्-

- क) नव अङ्गले युक्त बुद्धवचन
- ख) धातु चैत्य
- ग) परिभोग चैत्य
- घ) संघरत्न

महाराज ! यसलाई नै विभिन्न चीजबीजहरूले भरिएको  
पसल भनिएको छ । यस पसलमा जाति सम्पत्ति छ । वर्ण  
सम्पत्ति छ । प्रज्ञा सम्पत्ति, मनुष्य सम्पत्ति, देव सम्पत्ति,  
निर्वाण सम्पत्ति आदिले सजाइएको हुन्छ । यी सम्पत्तिहरू  
आफूसंग भएको योग्यता अनुसार खरिद गर्न सकिन्छ ।  
कसैले शील पालन गरी, कसैले उपोसथ ब्रत पालन गरी,  
कसैले अलि अलि पूण्य कार्य गरी यी सम्पत्तिहरू किनिरहेका  
हुन्छन् । जसरी अन्नको पसलमा अलिकति रकम लिएर गई  
अन्न किन्न सकिन्छ, त्यसरी नै हामीले अलि अलि पूण्य कार्य

गरेर पनि त्यस पूण्य कार्यको मूल्य अनुसार आफूलाई मनपर्ने सम्पत्ति किन्न सकिनेछ ।

महाराज ! यस पसललाई भगवान् बुद्धको विभिन्न चीजबीजहरूको पसल भनिन्छ ।

आयु आरोग्य सौन्दर्य, स्वर्ग र उच्चकूलमा जन्म हुने असङ्ख्यत भइरहेको निर्वाण - यिनीहरू सबै मानिसहरूले आ-आफ्नो कर्मरूपी अलिकति वा धेरै पैसा तिरी किनिरहेका हुन्छन् । यसरी नै भिक्षुहरू ! मानिसहरूले श्रद्धाको रकम तिरेर यी सम्पत्ति किनी धनी बन्ने गर्छन् ।

### धर्मपुरका नागरिक

महाराज ! भगवान् बुद्धको धर्मपुरमा तल उल्लेखित गुणले सुसम्पन्न मानिसहरू रहने गर्छन् -

सूत्रका ज्ञाता, विनयका ज्ञाता, अभिधर्मका ज्ञाता, धर्म उपदेशक, जातक विषयमा ज्ञान भएका, दीघनिकाय विषयमा ज्ञान सम्पन्न, मञ्जिभमनिकाय विषयमा ज्ञान सम्पन्न, संयुक्तनिकाय विषयमा ज्ञान सम्पन्न, अंगुत्तरनिकाय विषयमा ज्ञान सम्पन्न, खुटकनिकाय विषयमा ज्ञान सम्पन्न, शील सम्पन्न, समाधि सम्पन्न, प्रज्ञा सम्पन्न, बोध्यङ्ग भावनामा अभ्यासरत व्यक्तिहरू, व्याकरणको अर्थमा अभ्यासरत व्यक्तिहरू, अरन्यक आदि तेह धुतङ्ग पालन गरिरहेका व्यक्तिहरू, फल प्राप्त व्यक्तिहरू, शैक्षको

रूपमा रहेका व्यक्तिहरू, श्रोतापन्न, सकृदागामि, अनागामि, अरहत आदि फल प्राप्त व्यक्तिहरू, तीन विद्यामा पारङ्गत, ६ वटा अभिज्ञाले पूर्ण व्यक्तिहरू, ऋद्धिवान, प्रज्ञाको चरम सीमासम्म पुगिसकेका स्मृतिप्रस्थान, सम्यक प्रधान, ऋद्धिपाद, इन्द्रिय बल, बोध्यङ्ग मार्ग, विमोक्ष, रूप, अरूप, शान्त सुख समापत्तिदक्ष व्यक्तिहरू आदि ।

उक्त धर्मपुरमा बाँसको जडालको भाडी जस्तै अर्हतहरूले भरिभराउ भइरहेको हुन्छ । वीतराग, वीतद्वेष, वीतमोह, क्षीणाश्रव तृष्णारहित तथा उपादानरहित व्यक्तिहरू यही धर्मपुरमा बस्नु हुन्छ । यसरी नै भगवान बुद्धको यस धर्मपुरमा धुतङ्घधारी अरन्यक विहारवासी, अकुशललाई नाश गरिसक्नु भएका ध्यानी रूखा चीवरधारी एकान्त प्रिय धीरजनहरू बास गर्नुहुन्छ । भगवान बुद्धको यस धर्मपुरमा आसन लगाई बस्नुहो सन्थित धुतङ्घ पालन गर्नुभएका सन्तपुरुषहरू उठीरहने, चंक्रमण गर्ने, पंसुकुल चीवर धारण गर्नुहो आदि शुद्ध व्यक्तिहरू रहने गर्नुहुन्छ । त्यति मात्र होइन यस पवित्र धर्मपुरमा त्रिचीवर धारण गर्नुभएका सन्त सत्पुरुषहरू चर्म खण्ड धारण गर्नुहो, एकासन भोजन गर्नुहो पण्डितजन रहने गर्नुहुन्छ । यसरी नै यस नगरमा अल्पेच्छ कोमल शान्त स्वभाव भएका, आफूलाई प्राप्त भएको भोजनमा सन्तुष्ट रहनुहो पुरुषहरू, चञ्चल चित नभएका आफूलाई प्राप्त भएको लाभमा सन्तोषपूर्वक जीविका गर्नुहो सत्पुरुषहरू रहने गर्नुहुन्छ ।

यस नगरमा ध्यान प्राप्त गरी ध्यानमा मग्न रहनुभएका प्रजावन्तजन, शान्त चित्तसहित एकाग्र चित्त भएका शोक सन्तापरहित अरहत फलको आशा राखी अभ्यासरत रहनु भएका पुरुषहरूले बास गरिरहनु हुन्छ ।

भगवान बुद्धको यस धर्मपुरमा राम्भो आचरणले युक्त पुद्गलहरू, शैक्ष पुद्गलहरू, असल हित कामना गर्नुहुने पुद्गलहरूले बास गर्नुहुन्छ ।

यस धर्मपुरमा मलरहित श्रोतापन्न पुद्गल, सकृदागामि पुद्गल, अनागामि पुद्गल र अरहत्त पुद्गलहरूले बास गर्नु हुन्छ ।

यस नगरमा सतिपट्ठानमा कुशल रहनुभएका, बोध्यज्ञ भावनामा रातदिन लागिरहनु भएका, विपस्सना भावनालाई विचार गरिरहनुभएका धम्मधरहरू बास गर्नुहुन्छ ।

यसरी नै यस पवित्र नगरमा ऋद्धिपाद धर्ममा कुशल रहनुभएका, समाधि भावनामा लागिरहनुभएका पुद्गलहरूले बास गर्नुहुन्छ ।

यस नगरमा अभिज्ञा पारज्ञत व्यक्तिहरू, भगवान बुद्धरूपी पिताको अंश प्राप्त भइरहेको गोचरमा लागिरहनु भएका, आकाशमा विचरण गरिरहनु भएका पुरुषहरू बास गर्नुहुन्छ, निहुरेर ध्यान मग्न भई बसिरहनु हुन्छ । मात्रा मिलाएर मात्र कुरा गर्नुहुने व्यक्तिहरू अर्थात ठीक मात्रामा मात्र कुरा गर्नुहुने व्यक्तिहरू, गुप्तरूपमा रहेका ३ वटा द्वार भएका, राम्ररी

संयमित भएर रहनुभएका उत्तम रूपले इन्द्रिय दमन गर्ने  
कार्यमा राम्ररी शिक्षित भइसकेका व्यक्तिहरूले बास गर्नुहुन्छ ।

भगवान बुद्धको यस धर्मपुरमा तीन विद्याले पूर्ण रहेका,  
६ वटा अभिज्ञाले पूर्ण रहेका, ऋद्धिले पारङ्गत भएका र  
प्रज्ञाले पारङ्गत भएका पुरुषहरूले बास गर्नुहुन्छ ।

### धर्मपुरका सेनापति

धर्मपुरमा रहनुहोने नागरिकहरूलाई धर्मको कुरा बताउनु  
हुने भिक्षुहरूलाई धर्म सेनापति भन्ने गरिन्छ । पुरोहित पनि  
भन्ने गरिन्छ । महाराज ! भिक्षुहरूले अमूल्य, उत्तम ज्ञान  
धारण गर्नुहुन्छ । यस्तो भिक्षुहरूसंग संसारिक विषयमा टाँसेर  
बस्ने स्वभाव हुँदैन । अतुल्य गुण, अतुल्य यश सहितका, अतुल्य  
बल सम्पन्न, अतुल्य तेज भएका, धर्मचक्रलाई घुमाउन सक्नुहुने,  
फेरि प्रज्ञाको सीमानासम्म पुरिसक्नुभएका उहाँ धर्मपुरुषहरूलाई,  
भिक्षुहरूलाई भगवान बुद्धको धर्मपुरका सेनापति भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरका पुरोहित

महाराज ! उहाँ भिक्षुहरू ऋद्धिवान हुन्छन्, प्रतिसम्भदा  
प्राप्त व्यक्ति हुन्छन् । वैशारद्य प्राप्त हुन्छन्, आकाशमा घुमिरहने  
व्यक्ति हुन्छन् जसलाई कसैले परास्त गर्न सक्ने छैन । उहाँहरूले  
अरुहरूको आधार लिई जीविका गर्नुहन्न । समुद्र, सुमेरु पर्वत

सहित सारा पृथ्वीलाई कम्प पार्न सक्ने शक्ति भएका उहाँहरूले चन्द्र सूर्यलाई समेत छुने शक्ति प्राप्त गरिसकेको हुन्छ । आफ्नो रूप बदल्न सक्ने ऋद्धि क्षमता प्राप्त गरिसकेका व्यक्ति हुन्छन् उहाँहरू । दृढसंकल्प र उच्च उद्देश्य पूरा गर्नसक्ने क्षमता सहितका उहाँ भिक्षुहरूलाई नै धर्मपुरका पुरोहित पनि भनिन्छ ।

## धर्मपुरका भण्डागारिक

महाराज ! जुन भिक्षुहरूले धुतङ्ग ब्रतलाई क्रमबद्ध रूपले पालन गरी अल्पेच्छ रहने गर्थ, सन्तोषपूर्वक रहने गर्थ, विनय विपरित गई मार्गी हिँडने र विनयलाई नसुहाउने तरिकाले आफूलाई चाहिने वस्तु खोज्दै हिँडने कार्यलाई घृणा गर्थ, घरघर पिच्छे क्रमबद्ध तरिकाले भिक्षाटन गर्थ, जसरी भमराले फुलको आकारमा क्षति नपुऱ्याई त्यसको वासना मात्र चुसेर जान्छ, त्यसरी नै ती भिक्षुहरूले आफूलाई पनि अरुलाई पनि केही हानी नपुग्ने गरी भिक्षाचरण गरी एकान्त जङ्गलमा पस्तहुन्छ । उहाँहरूले आफ्नो जीवन र शरीरलाई केही पनि परवाह राख्नु हुन्न । अर्हत पद प्राप्त गराईदिने धुतङ्ग ब्रतलाई उहाँहरूले त्याग्नु हुन्न । महाराज ! ती भिक्षुहरूलाई भगवान बुद्धको धर्मपुरका कारण अकारण, ठीक बेठीक विचार गर्नसक्ने विवेक विचारसम्पन्न भण्डागारिक भन्ने गरिन्छ ।

महाराज ! धर्मपुरको श्री शोभा बढाई जाज्वल्यमान पार्ने यी भिक्षुहरू क्लेश मल रहित भई परिशुद्ध एवं निर्मल भई रहने गर्नुहुन्छ । उहाँहरू अन्तिम दिव्य चक्षु प्राप्त व्यक्ति भएर रहनु हुन्छ । महाराज ! उहाँ भिक्षुहरूलाई धर्मपुरको श्री शोभा बढाई जाज्वल्यमान पार्न सक्षम पुद्गल भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरका पुलिस पहरा

महाराज ! जुन भिक्षुहरू बहुश्रुत हुन्छन्, धर्म शिक्षा कण्ठपारी सूत्र अभिधर्मलाई धारण गर्नुहुन्छ, विनयलाई धारण गर्नुहुन्छ, मातिकालाई धारण गर्नुहुन्छ, सिथिल, घनित दीर्घ, न्हश्व, गरू, लघु अक्षर छुट्याउने कार्यमा दक्ष हुनुहुन्छ, नवअङ्गले पूर्ण परियति शासनलाई धारण गर्ने व्यक्ति हुनुहुन्छ, त्यस्ता (सर्वगुण सम्पन्न) भिक्षुहरूलाई भगवान बुद्धको धर्मनगरको धर्म रक्षा गरिरहनु हुने पुलिस पहरा रूपी पुद्गल भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरका न्यायाधीश (कानुन मन्त्री)

महाराज ! जुन भिक्षुहरू विनय धर्ममा दक्ष हुनुहुन्छ, निदान कारण विषयमा दक्ष हुनुभई आपत्ति वा अनापत्ति वा गरूक, लहुक, सतेकिच्छ, अतेकिच्छ, बुद्ध नगाम देश नागाम निगगह कर्मपटिकम्म, कर्म आसारण, कर्म निसारण, कर्म

पटिसारण, कर्ममा दक्ष भई विनय पारङ्गत भइरहनुहुन्छ,  
यस्ता (सर्वगुण सम्पन्न) भिक्षुहरूलाई भगवान् बुद्धको धर्मपुरको  
रूपलाई रक्षा गर्ने मन्त्रीहरू भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरको माली

महाराज ! जुन भिक्षुहरूले विमुक्तिरूपी फूल सिउरेर  
उत्तम अमूल्य र श्रेष्ठ अवस्थामा पुग्न सक्षम भएका छन्, फेरि  
मानिसहरूको प्रिय र आदरणीय व्यक्ति हुन सफल भइरहेका  
छन्, उहाँ भिक्षुहरूलाई भगवान् बुद्धको धर्मनगरका फूल बेच्ने  
माली भन्न सकिन्छ ।

### धर्मपुरमा फलफूल बेच्ने व्यक्ति

महाराज ! जुन भिक्षुहरूले चार आर्यसत्यलाई राम्ररी  
अबबोध गरी आर्यसत्य ज्ञान साक्षात्कार गर्न सफल भएका  
छन्, केरी बुद्ध शिक्षालाई पूर्णरूपले बुझ्न सफल भइसकेका  
हुन्छन्, चारवटा फलको सुख प्राप्त गर्न सफल भई यस  
विषयमा शंका रहित व्यक्ति बन्न सफल हुन्छन्, सत्यमार्गमा  
आउन कोशिस गरिरहेका अन्य व्यक्तिहरूलाई फल धर्म वितरण  
गरिरहेका हुन्छन्, यस प्रकारका पवित्र व्यक्तिहरूलाई भगवान्  
बुद्धको धर्मनगरमा रही फलफूल बेच्ने व्यक्ति भनिन्छ ।

## धर्मपुरमा सुगन्ध बेच्ने व्यक्ति

महाराज ! शीलरूपी सुगन्धले युक्त अनेकानेक गुण धारण गरी क्लेशरूपी मल नाश गरिसकेका परिशुद्ध भिक्षुहरूलाई भगवान् बुद्धको धर्मनगरमा सुगन्ध बेच्ने व्यक्तिहरू भनिन्छन् ।

## धर्मपुरका अम्मली

महाराज ! जुन भिक्षुहरू धर्म पिपासु भई अभिधर्म विनयमा प्रसन्न चित्तका साथ रहने गर्छन्, अरन्यक वृक्षमूल, एकान्त, शून्य स्थानमा वास गरिरहन्छन्, त्यहाँ रही धर्म रसपान गरी रहन्छन्, काय, वाक र चित्त तीनवटै द्वारबाट धर्मरस बुझी त्यहाँबाट पनि माथिल्लो स्तरको धर्म रसपान गर्नको लागि शुद्ध आचरण गर्दै जान्छन् । उनीहरूले आचरण गर्ने धर्मका नियमहरू यसरी छन्-

- १) अपिच्छ कथा - अल्पेच्छ कुरा
- २) सन्तुष्टि कथा - सन्तोषी कुरा
- ३) पविवेक कथा - एकान्त शून्यसंग सम्बन्ध भएको कुरा ।
- ४) वीरियारम्मण कथा- कोशिस गर्नुपर्नेसंग सम्बन्ध भएको कुरा ।
- ५) सील कथा - शीलसंग सम्बन्ध भएको कुरा ।
- ६) समाधि कथा - समाधिसंग सम्बन्ध भएको कुरा ।
- ७) पञ्जा कथा - प्रज्ञासंग सम्बन्ध भएको कुरा ।

- ८) विमुत्ति कथा - क्लेशरहित विमुत्तिको कुरा
- ९) विमुत्ति ज्ञान  
दस्सन कथा - विमुत्ति ज्ञानद्वारा विचार गर्ने  
विषयसंग सम्बन्ध भएको कुरा ।

ती भिक्षुहरूले यी ९ वटा धर्म सम्बन्धी विषयहरू जहाँजहाँ उपलब्ध हुने हो त्यहाँ गई ती धर्मको रसपान गर्ने गर्छन् । महाराज ! यी भिक्षुहरूलाई भगवान् बुद्धको धर्मनगरमा बस्ने धर्मका अम्मलीहरू भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरका पहरेदारहरू

महाराज ! जुन भिक्षुहरूले रातको प्रथम प्रहरदेखि अन्तिम प्रहरसम्म ननिदाइकन बसेर, उठेर चंक्रमण गर्दै रात बिताउने गर्छन् । भावना गर्दै सदा आफ्नो समय बिताउने गर्छन् । आफ्नो क्लेश हटाउने कार्यमा सदा प्रयत्नशील रहने गर्छन्, ती भिक्षुहरूलाई भगवान् बुद्धको धर्मनगरका पहरेदार भनिन्छन् ।

### धर्मपुरका पसलेहरू

महाराज ! जुन भिक्षुहरूले नवअङ्गले युक्त रहेको बुद्धवचनलाई अर्थद्वारा, व्यञ्जनद्वारा र प्रमाणद्वारा बुभाई

सिकाउने कार्य गर्छन्, बारम्बार उपदेश दिने गर्छन्, यी भिक्षुहरूलाई बुद्धको धर्मनगरमा धर्मलाई लोप हुन नदिई रक्षा गर्ने धर्मका पसलेहरू भन्ने गरिन्छ ।

### धर्मपुरका ठूलठूला सेठहरू

महाराज ! जुन भिक्षुहरूसंग धर्मरस सेवन गर्ने रूप, परियति कण्ठ पार्ने श्रुत धन हुन्छ, फेरि धर्मलाई निर्देश गर्ने स्वर, व्यञ्जन, लक्षण र गम्भीर तत्व ज्ञानले भरिपूर्ण भइरहन्छन्, त्यस प्रकारका भिक्षुहरूलाई धर्मनगरका ठूलाबडा सेठहरू भनिन्छन् ।

### धर्मपुरका बडा हाकिम

महाराज ! जुन भिक्षुहरू उत्तम धर्मदर्शनका रहस्यबाट यथार्थ बोध भइसकेका हुन्छन्, ध्यान विषयमा बारम्बार अभ्यास गरी विभिन्न आरम्मणलाई छुट्याउन सक्ने र त्यसको तात्पर्य राम्ररी बुझन सक्ने हुन्छन्, सूक्ष्माति सूक्ष्म शिक्षा प्राप्त गर्न सफल भइसकेका हुन्छन्, यस प्रकारका सक्षम पवित्र भिक्षुहरूलाई भगवान बुद्धको धर्मपुरका बडाहाकिम भनिन्छ ।

महाराज ! भगवान बुद्धको धर्मपुर यति व्यवस्थित रूपले बसाइएको छ, यति राम्ररी अभ्यास गरी तयार पारिएको

छ, फेरि त्यहाँ केही पनि चीजको कमी कमजोरी रहेको हुँदैन, सबै व्यवस्था अति राम्ररी मिलाइएको हुन्छ र त्यहाँ यति राम्ररी सुरक्षाको व्यवस्था मिलाइएको हुन्छ, जसको फलस्वरूप शासन बाहिरका शत्रुहरूले यहाँ कुनै पनि तरिकाले हमला गर्न असम्भव छ ।

महाराज ! त्यस धर्मनगरको यी गजबको सुव्यवस्थालाई हेरी भगवान बुद्धको विशेषतालाई चिन्न सकिन्छ ।

जसरी राम्ररी विभाजन गरिएको नगरलाई हेरी मानिसहरूले त्यस नगरको कारिगरको दक्षता पत्ता लगाउने गर्थ, त्यसरी नै लोकनाथ (बुद्ध)को श्रेष्ठपुरलाई हेरी भगवान बुद्ध कस्तो हुनुहुँदो रहेछ भनी उहाँको महत्वलाई पत्ता लगाउन सकिन्छ ।

समुद्रको तरङ्गलाई हेरी मानिसहरूले त्यस समुद्र कति ठूलो रहेछ भनी पत्ता लगाउन सक्छन् । त्यसरी नै शोकलाई दूर गर्नुहुने, अपराजित तृष्णा नाश गर्नुहुने, भवसागर पार गर्नुहुने, देवताहरू र मनुष्यहरू मध्ये महान् हनु भएका उहाँ भगवान बुद्धको तरङ्ग हेरी जसरी यो धर्मको तरङ्ग बगीरहेको छ, त्यसरी नै उहाँ बुद्ध कतिको महान् हुनुहुँदो रहेछ भनी मानिसहरूले उहाँको धर्मको उच्च चुचुरोलाई हेरी पत्ता लगाउन सक्नेछन् ।

यति उच्च चुचुरो हिमालयको मात्र हुन्छ । यसरी नै यस धर्मको चुचुरोलाई हेरी तृष्णाको आगो शान्त र उपधि रहित हुनेछ ।

भगवान् बुद्धको यी उच्च, भव्य र महान् धर्मपर्वतलाई हेरी उहाँ श्रेष्ठ महावीर बुद्ध कति महान् रहेछन् भनी पत्ता लगाउन सकिन्छ । जसरी गजराजको पद चिन्ह हेरी मानिसहरूले त्यो हाति कति ठूलो रहेछ भनी पत्ता लगाउने गर्छन् । यसरी नै भगवान् बुद्ध गजराजको पदचिन्ह हेरी बुद्धिमान् व्यक्तिहरूले उहाँ बुद्ध कति महान् हुनुहुँदो रहेछ भनी पत्ता लगाउने गर्छन् । जसरी जङ्गलमा सिंह गर्जेको सुनी अन्य साना ठूला जनावरहरू भयभीत भई भाग्ने गर्छन्, त्यसरी नै अन्य मतका व्यक्तिहरू भयभीत भई भागेको देखेर पत्ता लगाउन सकिन्छ कि धर्मराज भगवान् बुद्ध गर्जिनु भएको कारणले उनीहरू भागेका रहेछन् ।

पृथ्वीमा जमीन हिलाम्मे भएको देखेर र रुखहरू हरिया सफा पातहरूले सुशोभित भएको देखेर भारी वृष्टि भएको अनुमान गर्न सकिन्छ । त्यसरी नै संसारका मानिसहरू आमोद प्रमोद मुक्त भएको देखी धर्ममेघ (बुद्ध) संसारमा बर्सिनु भएको रहेछ भनी पत्ता लगाउन सकिन्छ ।

जसरी पापरज पाप पङ्क त्यागीजनहरूलाई देखी धर्म नदी धर्म समुद्रमा बगिरहेको छ भनी पत्ता लगाउन सकिन्छ । त्यसरी नै संसारका देवताहरू र मनुष्यहरूले धर्मामृत पान गरिरहेको हेरेर धर्मको धारा बगिरहेको रहेछ भनी पत्ता लगाउन सकिन्छ ।

उत्तम सुगन्ध वासना आइरहेको सुँधेर सुगन्धले भरिपूर्ण फूल फुलिरहेको रहेछ भनी पत्ता लगाउन सकिन्छ । त्यसरी नै शील सुगन्ध देवता र मनुष्यहरू समक्ष बहिरहेको देखेर अलौकिक बुद्ध प्रकट हुनुभएको कुरा पत्ता लगाउन सकिन्छ । महाराज ! यसरी नै सयौं हजारौं कारण, तर्क तथा उपमा देखाई बुद्धको बल पत्ता लगाउन सकिन्छ ।

महाराज ! जसरी एउटा मालीले आफ्नो गुरुले बताएनुसार र आफ्नो अकल प्रयोग गरी नाना प्रकारका फूलहरूको झुंगुरबाट फूल केलाई राम्रो फूलको माला उनेर शोभा बढाउने गर्छ, त्यसरी नै भगवान बुद्ध पनि अनेक रंगी विरंगी फूलहरूको समूह समान अप्रमाण गुणले सम्पन्न हुनुहुन्छ । मालीले अनेक रंगी विरंगी फूलहरू केलाई शोभायुक्त माला उने जस्तै पहिले पहिलेका आचार्यहरूले बताए अनुसार भगवान बुद्धको तेजानुभाव पनि यति उति भनी गिन्ति गर्न सकिन्न । महाराज ! सुन्ने इच्छा मात्र प्रकट गर्नुस् आफ्नो अनुमानले भगवान बुद्धको बल शक्ति देखाउन सक्छु ।

साधु ! साधु ! भन्ते ! शायद अरू व्यक्तिहरूले यसरी कारण र उपमा दिएर बुद्धको बल संक्षिप्त रूपले प्रयत्न गरी देखाउन मुश्किल नै हुनेछ । मेरो शंका समाधान भयो । भन्ते ! मलाई पूरा विश्वास रह्यो । हजुरको उत्तर अति राम्रो, बडो विचित्र रहेछ ।



भावना गर्नु अघि थाहापाउनु पर्ने कुरो

शून्य, पल्लङ्क, सीधा, पञ्च, पूर्व, दल्ह, उद्योग भावना

- |                 |   |
|-----------------|---|
| १) शून्य        | - एकान्त स्थानमा बस्ने  |
| २) पल्लङ्क      | - पलेटी कसेर बस्ने  |
| ३) सीधा         | - सीधा (शरीर सीधा राखेर) बस्ने ।  |
| ४) पञ्च         | - चक्षु, श्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय आदि<br>पाँच द्वारहरू बन्द गरेर बस्ने ।                       |
| ५) पूर्व        | - आफू बसेको स्थानबाट पाँच हात जति<br>पर बोधिपल्लङ्क र भगवान बुद्ध हुनुभएको<br>स्मरण गरी बस्ने । |
| ६) दल्ह         | - भगवान् बुद्धलाई स्थिर भावले स्मरणगर्ने ।  |
| ७) उद्योग भावना | - भगवान् बुद्धलाई स्मरण गरी “अरहं<br>अरहं” भनी भावना गर्ने ।                                    |

रोग, व्याधि, मृत्यु आउनु अगाडि भावनालाई बलियो  
पाईं लाने गर्नु । बलियो पाईं लाने गर्नु ।

अपाय दुर्गति देखी डर लाग्छ भने सानो दुःखलाई सहदै  
मेहनत गईं सहनु । मेहनत गईं सहनु ।

निर्वाण सुखलाई मनपराउँछौं भने सानो सुखलाई मेहनत  
गईं हटाउने गर्नु । मेहनत गईं हटाउने गर्नु ।

तीनवटा क्षेत्रमा रहेका सत्त्व प्राणीहरू सुखी होस् ।  
सुखी होस् ।

## बुद्धानुस्मृति भावना

आफू बसेको स्थानबाट पाँच हात जति पर बोधिपल्लङ्क र साँच्चिकै भगवान बुद्ध विराजमान हुनुभएको जस्तै ठानी प्रसन्न चित्त गरी मनद्वारबाट राम्ररी महशुस गर्ने । यसरी मनले महशुस गरिसकेपछि सात दिनसम्म तीव्र तरिकाले “अरहं अरहं” भनी बाँस जुडाई आगो निकाल्न लागेको व्यक्तिले जस्तै एकदम उद्योग वीर्य निकाल्दै कमसेकम ३/४ घणटा भावना गर्नु पर्नेछ । आरम्मणलाई नछुटाइकन उद्योग गर्न नसकेसम्म भावना गर्दै लानु पर्दछ ।

मनले इच्छा गरे जस्तै आरम्मण गर्ने विधि भावना बसिसकेपछि आफ्नो शरीरमा भगवान बुद्ध विराजमान भइराखेको रूप मनले स्मरण गर्ने । यसरी ७ दिनसम्म मनले स्मरण गर्दै “अरहं अरहं” भनी भावना गर्नुपर्दछ ।

यसप्रकारको भावना बसिसकेपछि आफ्नो शिरमा भगवान बुद्ध उभिरहनु भएको छ भनी मनले स्मरण गर्ने । यसरी ७ दिनसम्म स्मरण गरी “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि आफ्नो शिरमा बुद्धले चंक्रमण गर्नुभएको रूपलाई मनले स्मरण गर्ने । यसरी स्मरण गरी ७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि आफ्नो शिरमा भगवान बुद्ध सिंहशैश्या रूपले बस्नु भएको दृष्ट्यलाई मनले स्मरण गर्ने ।

यसरी स्मरण गर्दै ७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना बसिसकेपछि श्रावस्ती कण्डब्ब वृक्षमूलमा बुद्ध विराजमान हुनुभएको बेला रश्मि फैलाउनु भई दायाँ आँखाबाट पानीको धारा निस्केको, बायाँ आँखाबाट आगोको धारा निस्केको दृष्य स्मरण गर्ने ।

नाकको दायाँ प्वालबाट पानीको धारा निस्केको र नाकको बायाँ प्वालबाट आगोको धारा निस्केको दृष्य स्मरण गर्ने ।

दायाँ कानबाट पानीको धारा, बायाँ कानबाट आगोको धारा निस्केको दृष्य मनले स्मरण गर्ने । यसरी मनले स्मरण गर्दै “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि तावतिंस देवलोकको पण्डु कम्बल मणिको शीलासनमा भगवान बुद्धले देव ब्रह्मा परिषदलाई धर्मदेशना गरिरहनु भएको दृष्यलाई मनले स्मरण गर्ने । यसरी स्मरण गरी ७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि तावतिंस देवलोक र संकाश्य नगरको बीचमा मणिको भञ्याङ्गबाट भगवान बुद्ध ओर्लनुभएको, दायाँतर्फ सुनको भञ्याङ्गबाट इन्द्र ओर्लनुभएको र बायाँतर्फको भञ्याङ्गबाट ब्रह्मा ओर्लनुभएको दृष्य मनले स्मरण गर्ने । यसरी मनले स्मरण गर्दै ७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि संकाश्य नगरमा भञ्याङ्ग नजिक भगवान बुद्ध रहनुभई ब्रह्मा, देव, मनुष्य परिषदहरू

सहित भिक्षुसंघलाई उपदेश दिनुभएको दृश्य मनले स्मरण गर्ने ।  
यसरी स्मरण गर्दै ७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना  
गर्ने ।

यो भावना पनि बसिसकेपछि कुशीनगरमा मल्ल राजाहरूको  
उद्यानमा दुई सालवृक्षको बीचमा ओछ्याइएको मणिको  
खाटमाथि भगवान बुद्ध विराजमान हुनुभई आराम लिनुभएको  
र ब्रह्मा, देव, मनुष्य परिषद सहित भिक्षुसंघलाई उपदेश  
दिइरहनु भएको दृश्य मनले स्मरण गर्ने । यसरी स्मरण गर्दै  
७ दिनसम्म “अरहं अरहं” भनी भावना गर्ने ।

यही रूपले जन्मभरि भगवान बुद्धको आरम्मण नछुटाइक्न  
भावना गर्नु पर्दछ । जन्मभरि भगवान बुद्धको आरम्मण निश्चय  
पनि छुट्ने छैन भनी पूरा पूरा विश्वास भइसकेपछि  
सक्कायदिटि॒ हटाउन सक्ने गरी अनन्तरूपले देख्न सक्ने गरी  
नामरूपलाई भावना गर्दै लानु पर्छ । विचिकिच्छा हटाउन  
सक्ने गरी पच्चय परिगगह ज्ञाण प्राप्त गर्न सक्ने गरी नामरूप  
उत्पन्न भएको हेतुलाई भावना गर्दै लानु पर्दछ ।

अनिच्च, दुख, अनन्तलाई साक्षात्कार गर्न सक्ने गरी नामरूप  
उत्पत्ति र विनाश भएको कारणलाई भावना गर्दै लानु पर्दछ ।

अनिच्च, दुख, अनन्त साक्षात्कार गर्न सक्ने गरी भङ्ग  
ज्ञाण प्राप्त गर्न सक्ने गरी नामरूप विनाश हुँदै गएको सत्यतालाई  
पनि भावना गर्दै लानु पर्दछ ।

## बुद्ध हुनको लागि प्राप्त गर्नुपर्ने अङ्ग द वटा

- १) मनुष्य भएर जन्मनु पर्दछ ।
- २) पुरुष नै हुनुपर्नेछ ।
- ३) अरहन्त मार्ग र अरहन्त फल प्राप्त गर्न सक्ने हेतु भएको हुनुपर्दछ ।
- ४) भगवान् बुद्धको साक्षात् दर्शन गरेको हुनुपर्दछ ।
- ५) प्रवजित भाव हुनुपर्दछ ।
- ६) बुद्ध बन्नको लागि जीवन त्याग गर्न सक्ने क्षमता हुनु पर्दछ ।
- ७) पाँचवटा अभिज्ञा (अभिज्ञा) र आठवटा समापत्ति लाभी हुनुपर्दछ ।
- ८) बुद्ध हुने प्रबल इच्छा हुनु पर्दछ ।

## चारवटा वैशारद्य

भिक्षुहरू ! तथागत चार विषयमा (वैशारद्य) निर्मित हुनुहुन्छ । ती यसरी छन्-

- १) चतुआर्य सत्य विषयमा राम्रो ज्ञान सम्पन्न भएकोलाई प्रस्तुत (प्रकट) गर्न सक्ने क्षमता ।
- २) आश्रवक्षय भएको सत्यतालाई प्रस्तुत (प्रकट) गर्न सक्ने क्षमता ।
- ३) पाराजिका आदि अकुशल कर्म ध्यान मार्ग फलको लागि अन्तराय हो भनी प्रस्तुत (प्रकट) गर्न सक्ने क्षमता ।

४) शीलादी गुणधर्मले संसार दुःखबाट मुक्त हुन सकिन्छ  
भनी प्रस्तुत (प्रकट) गर्न सक्ने क्षमता

### बोधिसत्त्व चर्या

- १) हरेक अवस्थामा पनि सत्त्वप्राणीहरूको दुःख हटाउने कामना  
लिई करूणायुक्त चित्तलाई अघि सारी प्रज्ञा ज्ञानले केलाउदै  
हेरिरहने स्वभाव बोधिसत्त्वको प्रधान चर्या भइरहन्छ ।
- २) आफूले गर्न लागेको कुशल कार्य पूर्ण नभएसम्म  
बोधिसत्त्वहरूको त्यस कार्यबाट पछि हट्ने स्वभाव कदापि  
हुने छैन । सम्यक सम्बुद्ध हुने प्रणिधान बाहेक अन्य सुख  
ऐश्वर्य प्राप्त भए पनि त्यसमा सन्तोष भएर बस्ने स्वभाव  
बोधिसत्त्वहरूको हुँदैन ।
- ३) बोधिसत्त्वहरूले कुशल कार्य गर्ने समयमा तल उल्लेखित  
विशेषताहरू प्रस्तुत भइरहने गर्छ-
  - क) कुनै पनि कार्य पूर्ण नभएसम्म त्यस कार्य पूरा गर्नको  
लागि व्यस्त भइरहन्छ ।
  - ख) कार्य पूरा नभएसम्म त्यस कार्यलाई गर्वपूर्वक  
निरन्तरता कायम राखी रहन्छ ।
  - ग) अटूट एवं अखण्डरूपले उक्त कार्यमा व्यस्त भइरहन्छ ।
  - घ) आफ्नो कार्य पूरा नभएसम्म दीर्घकालसम्म व्यस्त  
भइरहन्छ ।

यसरी यी चार प्रकारका विशेषता प्रकट गरी उक्त कार्यमा लागिरहन्छ ।

- ४) त्याग भाव प्रकट गरी दान गरिरहन्छ ।
- ५) सत्यतामा आधारित कर्णप्रिय एवं आनन्दित कुरा गर्ने स्वभाव भइरहन्छ ।
- ६) सधैं परहित हुने कार्यमा लागिरहन्छ ।
- ७) परलाई पनि आफू समान ठानी व्यवहार गरिरहन्छ ।
- ८) आफ्नो हरेक राम्रा उद्देश्यहरू पूरा गर्नको लागि उद्योग वीर्य अगाडि सारी प्रयासरत भइरहन्छ ।
- ९) यन्त्रले गर्नुपर्ने कार्य र हातले गर्नुपर्ने कार्य आदि शिल्पहरू र अन्य हरेक कार्यमा दक्षता सम्पन्न भई अल्सी भाव हटाई त्यस कार्य पूर्ण गर्ने स्वभाव भइरहन्छ ।
- १०) सबै प्राणीहरूलाई आफ्ना बुबालाई जस्तै प्रेमभाव प्रकट गरिरहने हुन्छ ।
- ११) अरूले आदर गौरव राख्न योग्य हुने गरी “मनुष्यहरूले र देवताहरूले गौरव राख्न योग्य हुने गरी” रूप, गुण र धर्मले सम्पन्न व्यक्ति भइरहन्छ ।
- १२) उहाँ आफूले अन्य प्राणीहरूलाई स्नेह प्रकट गरे जस्तै सबै प्राणीहरूले पनि उहाँलाई स्नेहभाव व्यक्त गरिरहेको हुन्छ ।
- १३) सबै प्राणीहरूलाई हित उपकार हुने मैत्री र दुःखबाट मुक्त हुने करुणायुक्त चित्त बनाई रहन्छ ।

- १४) रोग, व्याधि रहित स्वभाव भइरहन्छ । गमनागमन आहार, व्यवहार, रहनसहन आदि विषयमा विचार सम्पन्न भएको कारणले पनि र कुशल सुचरित्रको प्रभावले अक्सर गरी उहाँ निरोगी भइरहन्छ ।
- १५) जन्मजन्मान्तर परिशुद्ध श्रद्धाले पूर्ण भइरहन्छ ।
- १६) वीर्य र प्रज्ञा आदि गुणले पूर्ण भइरहन्छ ।
- १७) संसारको जन्म मरण चक्रमा घुमिरहे पनि साधारण प्राणी जस्तै नभई क्लेश कममात्र रहेको व्यक्तिको रूपमा प्रस्तुत भइरहन्छ ।
- १८) कसैले होश दिलाउनको लागि दिएको सुभावलाई खुशीसाथ सुन्ने, सुवचन गुणले सम्पन्न व्यक्ति हुन्छ ।
- १९) सुख, दुःख र अपमान आदिबाट कम्प नभइकन सहन सक्ने क्षमता सहितको स्वभाव हुन्छ ।
- २०) असल कार्यहरू सम्पन्न गर्नको लागि हर्ष, प्रसन्न चित्तले तन, मन दिई लागि पर्ने स्वभाव हुन्छ ।
- २१) अरूलाई हेला निन्दा नगरी सबै प्राणीहरूलाई आफूसंग मित्रता भाव स्थापित हुने गरी शारीरिक र वाचसिक कुशल व्यवहार गर्ने बानी हुन्छ ।
- २२) आफू समक्ष आइपुगेका व्यक्तिहरूसंग कुशल वार्ता गर्ने विषयमा अत्यन्त दक्ष हुन्छ ।
- २३) क्रोधी र इष्टालु बानी हुँदैन ।

- २४) आफूप्रति अरूले गरेको गुणलाई बिसने स्वभाव हुँदैन ।
- २५) आफूभन्दा बढी जानेबुझेका व्यक्तिहरूसंग प्रतिवृन्दी बन्ने स्वभाव हुँदैन ।
- २६) आफ्नो धन अरूलाई नदिने भन्ने खालको कञ्जुसीपना स्वभाव हुँदैन ।
- २७) अरूलो सफलता र उन्नति देखी इर्षा गर्ने स्वभाव हुँदैन ।
- २८) आफ्नो दोष छोपी माया नभएको भाव देखाई छलकपट गर्ने “साठेय्य” स्वभाव हुँदैन ।
- २९) अभिमानी एवं घमण्डी स्वभाव हुँदैन ।
- ३०) हरेक स्थानहरूमा कडा स्वभाव हुँदैन ।
- ३१) अरूले दिएको पीडा कष्टलाई सहने स्वभावको हुन्छ ।  
अरूलाई पीडा कष्ट दिने स्वभाव हुँदैन ।
- ३२) गर्नुपर्ने कार्यहरूमा विस्मृति हुँदैन ।
- ३३) शान्त र स्थीर चित्त कायम भइरहने हुन्छ ।
- ३४) शत्रु, मित्र, ठूला बडा र तल्लो स्तरको व्यक्ति भनी भेदभाव नराखी हरेक क्षेत्रमा न्याय अनुकूल काम एवं व्यवहार गर्ने स्वभावको हुन्छ ।
- ३५) अरूलाई परोपकार कार्य गर्ने बेला उनीहरूले आफूलाई प्रत्युपकार गरोस् भन्ने आशा राख्दैन ।
- ३६) परोपकारी कार्य गर्दा जतिसुकै दुःख कष्ट आइपरे पनि त्यस दुःख कष्टलाई परवाह राख्दैन ।

- ३७) कहिले पनि नियत मिथ्यादृष्टि हुँदैन ।
- ३८) क्लेश निवारण नभएको कारणले अनियत मिथ्यादृष्टि धारण गरिराखेपनि दोष देख्ने बित्तिकै त्यसलाई त्यागी सम्यकदृष्टि धारण गर्ने स्वभावको हुन्छ ।
- ३९) सधैं हित उपकार हुने कार्यमा प्रेरणा दिने र खराब कार्यलाई रोक्ने स्वभाव हुन्छ ।
- ४०) अरुहरूको मुख अगाडि प्रशंसा गरी मुख पछाडि कुरा काट्ने स्वभाव हुँदैन ।
- ४१) परस्पर मिलिजुलि बसिरहेका कसैलाई पनि छुटाउने, चुक्ली लगाउने आदि खराब स्वभाव हुँदैन । तर एक आपसमा बेमेल भई छुट्टिरहेका व्यक्तिहरूलाई एक आपसमा मेलमिलाप गरी बस्ने अवस्था श्रृजना गरिदिन्छ ।
- ४२) आफूले पनि घूस नखाने र अरुलाई पनि घूस नखुवाउने स्वभावको हुन्छ ।
- ४३) अरुहरूको दोष भएपनि उनीहरूलाई दण्ड दिने र सास्ति गर्ने कार्य नगरी अवस्थालाई हेरी मैत्रीपूर्वक सम्भाउने बुझाउने स्वभाव हुन्छ ।
- ४४) अरुलाई उपकार गर्ने समयमा उनीहरूबाट आफूलाई उपकार हुने आशा नराखी मैत्रीपूर्वक उपकार कार्य गरिरहन्छ ।
- ४५) आफूलाई कसैले सानो उपकार गरेपनि त्यसलाई महागुण

सम्भी रहने गर्छ ।

- ४६) कसैले आफूसंग केही चीज मार्न आएमा सन्तोषपूर्वक त्यो चीज दिएर पठाउँछ । तर आफूले अरुसंग केही चीज मार्नुलाई हीन, घृणा र नराम्रो कार्य ठान्ने गर्छ ।
- ४७) हीन, मध्य र उत्तम आदि विषयमा भेदभाव नगरी क्रमैसंग भिक्षाटनमा जाने भिक्षुले जस्तै अरुसंग सिक्नु पर्ने शिक्षा सिकी ज्ञान बुद्धि बढाउँदै लाने स्वभाव हुन्छ ।
- ४८) बेहोशपूर्वक कुनै गलत कार्य आफूबाट हुन गएमा त्यसमा अपशोच नगरी पछि भविष्यमा त्यस्तो गल्ती दोहोरिन नदिन होशियारी बनिरहन्छ ।
- ४९) कुनै भय, आपदविपद आदि आइपरे पनि नहतारिकन इन्द्रिय संयम गरी धैर्यपूर्वक उत्त भय शान्त नहुञ्जेल मेहनतपूर्वक भय हटाउन कोशिस गरिरहन्छ ।
- ५०) अष्टलोक धर्मबाट कम्प हुँदैन ।
- ५१) अरुहरूले चित्त कम्प गर्न नसक्ने गरी दृढ चित्तका साथ कार्यरत रहने गर्छ ।

उत्तम पुरुषहरू अलोभ धातु, अमोह धातु, अदोष धातु, नेकखम धातु, निस्सरण धातु, अज्भासय धातु आदि ६ वटा धातुहरूले पूर्ण भई अन्य धेरै असल आचरण पालन गरिरहेका हुन्छन् ।

यस प्रकारका उत्तमाचरण पारमी धर्मपालन गरिरहने महापुरुषहरूले आशिका गरे अनुसार एकातर्फबाट बुद्ध हुनका

लागि पारमी पूरा गरिरहेका हुन्छन् भने अर्कोतर्फबाट सबै प्राणीहरूलाई हित उपकार गर्ने कार्यमा लागिरहेका हुन्छन् । त्यसैले चरियापिटक अट्ठकथामा यसरी उल्लेख गरिएको पाइन्छ-

“चरन्ति लोकत्थ चरिया पुरेन्ति सब्ब पारमि”

यही नियमानुसार चार असंख्य र एकलाख कल्प वा सो भन्दा बढी चारित्र मण्डपलाई स्थापना गर्दै आफूसंग भएका सबै क्लेशलाई विस्तार विस्तारै हटाउँदै, हेतुको रूपमा रहेको पारमी धर्म पूरा गर्न आवश्यक कार्य गरिरहन्छ । यसरी सबै गुणको खानी समान भई अन्तिम जन्ममा केवल पूण्यको राशि, पूण्यको डल्लो समान भई सबै प्राणीहरू माझ शोभायमान रूप सम्पन्न भइरहन्छ । तीक्ष्ण ज्ञान बुद्धिले सम्पन्न भई महानुभाव भइरहेको हेतुलाई सुहाँउदो तरिकाले फल धारण गरिरहेको कार्यलाई विज्ञजनहरूले प्रमाणित गर्न्छ । यसलाई सिलसिलानुसार बुद्ध भएको भनिन्छ । अन्य धर्मावलम्बीहरूको जस्तै कारण विना नै ईश्वरलाई महान स्थानमा राखे जस्तै नभई बुद्ध शिक्षामा हेतुफल सबै प्रकट भइरहेको हुन्छ ।

त्यसैले बुद्ध धर्मावलम्बीहरू सबैले भगवान बुद्धको शिक्षा अनुगमन गरी यस जन्ममा मात्र होइन निर्वाण प्राप्त नभएसम्म राम्रो आचरणका साथ पारमिता धर्मलाई अभ्यास गर्दै परिपक्व पारमी सहित ज्ञान बुद्धि र अधिपति प्राप्त गरी कोशिस र वीर्य वृद्धि गर्दै लान सकोस् ।